उत्तराखण्ड के लोकगीतों में पर्यावरण चेतना एक साहित्यिक अध्ययन

*अवधेश बिष्ट (शोध छात्र) एवं डा0 पूनम देवी
हिन्दी विभाग, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय पोखड़ा, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

****

शोध सार:- ''हिमालय'' की गोद में स्थितपवित्र अतिपावन इस धरा पर ''उत्तराखण्ड देवभूमि'' पर ''उत्तराखण्ड'' राज्य अपने धार्मिक महत्व, पवित्र नदियों और मंदिरो की वजह से दिया गया है।उत्तराखण्ड अपने पवित्रता एंव प्राकृतिक नैसर्गिक सुन्दरता के लिए विश्व विख्यात है।उत्तराखण्ड में लोकगीत लोक के गीत है जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है। लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एव लोक के लिए लिखें गऐं गीतो को लोकगीत कहा जा सकता है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिये मानव अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबन्द वाणी सहज उद्धत करता है, वही लोकगीत है।

***बीजशब्द :** उत्तराखण्ड, हिमालय, लोकगीत, लोकसंस्कृति, छन्दोबद्ध वाणी, लोककाव्य*

****

प्रस्तावना - लोक गीत में लोक और गीत दो शब्दों का योग है ''जिसका अर्थ है, लोक के गीत'' लोक शब्द वास्तव में अंग्रेजी के फोक का पर्याय है जो नगर तथा ग्राम की समस्त साधारण जन का द्योतक है। लोकगीतो के विषय सामान्य मानव की सहज संवेदना से जुड़े हुए है। इन गीतो में प्राकृतिक सौन्दर्य सुख दुख और विभिन्न संस्कारो और जन्म-मृत्यु को बड़े ही हृदयस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार लोकगीत शब्द का अर्थ है ।

1. लोक में प्रचलित गीत
2. लोक रचित गीत
3. लोक विषयक गीत

कजरी, सोहर, चैती, लंगुरिया आदि लोकगीतो की प्रसिद्ध शैलियाँ है। सीढने गीत विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले गाली-गीत है। इसके अतिरिक्त सस्कार भी भोजपुरी के परम्परागत लोकगीत है। जिन्हं लोग अपने जीवन की धारा से जोडकर संस्कृति को आगे बढ़ा रहे है इसमे लोक गीतकारो व लोकगायकों का बहुत बड़ा योगदान है। 'लोक' से उन लोगों का अभिज्ञान होता है जो नगर संस्कारो एव सविध शिक्षा से वंचित है और विदग्ध अंह चैतन्य से रिक्त है। लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है। इसी प्रकार गीत शब्द का अर्थ प्रायः उस कृति से है जो गेय हो, लोकगीत को स्वतः को स्वतः स्फूर्त संगीत कहा गया है।

लोकगीतो के सम्बन्ध में लोक साहित्य के मर्मज्ञो ने विभिन्न प्रकार के कलात्मक ढंगो से अपने विचार व्यक्त किए है।

लोकगीत की परिभाषा

आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नही है बल्कि नगर व गाँवो में फैली हुई समुचित जनता है जिसके व्यवहारिक ज्ञान का आधार साधरण पोथियााॅ नही है ये लोग नगर में परिष्कृत रूचि सम्पन्न तथा संस्कृत समझे जाने वाले लोंगो की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभयस्थ होते है।

डा० सत्येन्द्र वह गीत जो लोक-मानस की अभिव्यक्ति भी हो लोकगीत के अन्तर्गत आएगा।

डा० तेज नारायण लाल लोकगीत मनुष्य की प्रकृत भावना की अभिव्यक्ति से जन्मा है आदिम वातावरण में पला है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लोकगीतो में जन जीवन की सच्ची झॉकी निहित है।

डा० प्रियतम कृष्ण कौल लोकगीत जनमानस की अनुभूतियो की लयपूर्ण अभिव्यक्ति है और वह जीवन की यथार्थ भावनाओं को प्रस्तुत करते है।

शोध पत्र का उददेश्य इस प्रस्तावित शोध कार्य का मुख्य उददेश्य उत्तराखण्ड में लोक गीतो की युगो युगो से चली आ रही प्रथा एवं संस्कारो को जन-जन तक पहुॅचाना है। इस शोध कार्य को प्राकृतिक चेतना प्रकृति एवं सांस्कृतिक सभ्यता को गहराई से अध्ययन करना है।

मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो प्रखण्ड़ो में विभाजित किया जाता है प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण तकनीकी मानव द्वारा आर्थिक उददेश्य और जीवन में विलासिता के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ छेड़छाड़, पृथ्वी पर पाए जाने वाले भूमि जलवायु, पेड़-पौधे एंव जीव जन्तुओ का समूह जो हमारे चारों और है।

पर्यावरण के ये जैविक और अजैविक घटक आपस में अन्तःक्रिया करते है। जिसे हम पारिस्थितिकी तन्त्र के रूप में जानते हैं।

इस शोध कार्य के द्वारा मानव सभ्यता प्रकृति एंव पर्यावरण को बचाने का अथक प्रयास किया गया है। लोकगीतों के द्वारा अपनी संस्कृति सभ्यता और लोकगीत के माध्यम से जन-जन तक अपनी मिट्टी की महक को पहुँचना है।

डा० शोध पद्धति में भविष्य में आने वाली नई पीढी के लिए यह शोध कार्य प्रेरणा का स्त्रोत एंव मार्गदर्शक सिद्ध होगा जो कि भविष्य में अनुसंधान छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध पत्र का महत्वः-

लोकगीतों में लोकगीत किसी भी देश की सभ्यता संस्कृति और विचारो से हमें परिचय कराते है। लोक साहित्य के विकास के लिए इसका अत्यधिक लाभ पहुँचता है।

इससे हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रो के रीति रिवाज रहन-सहन पूर्व, धर्म इतिहास आदि की पहचान होती है। जिससे वर्तमान की काफी चीजों में सुधार लाए जा सकते है।

कई मामलो में इन गीतों से वर्तमान के कवियों को अपनी रचना करने में काफी मदद मिलती है। इन लोकगीतों से हमे अपने साहित्य को सुदृढ करने का अवसर मिलता है।

इससे हमारे समाज, परिवार और रिश्तेदारी से सम्बन्ध, मेल मिलाप पवित्र स्नेह तथा गृहस्थ जीवन की समस्याओं आदि की जानकारी मिलती है। साथ ही लोक समाज के इतिहास घटनाओं धार्मिक प्रवृत्तियो तथा तत्कालीन मनोभावों आदि की भी जानकारी होती है। इसलिए लोकगीत कभी पुराना नहीं होता और नही इसे भुलाया जा सकता है, इस लोक समाज के लिए नई पीढी मौखिक परम्परा में जीवित रहते है और शायद इसलिए यह प्राचीन काल से आज तक भी लोक भाषा में जीवित है और शायद इसलिए यह प्राचीन काल से आज तक भी लोक भाषा में गाये जाते आ रहे हैं।

प्रत्येक लोकगीत उस क्षेत्र के उस राज्य की रीढ़ की हड्डी होती है जो जन मानष की द्योतक है और इसीलिए लोकगीत जन्मो जन्मोत्तर का चिरस्थायी बना रहता है।

अनुसंधान क्रिया-विधि शोध कार्य हेतु अनुसंधानकर्ता द्वारा उत्तराखण्ड के लोकगीतो में पर्यावरणीय चेतना एक साहित्यिक अध्ययन विषय का चयन किया गया है। इस विषय को शोध प्रबन्ध के रूप में चयन करने का मुख्य उददेश्यं यह है कि उत्तराखण्ड में लोकगीतो की विविधता उत्तराखण्ड की लोक परम्परा का विविध विषयों का संग्रह है लोक गीतो का समाज के परिपेक्ष्य में तथा

पर्यावरण चेतना का सम्बन्ध में क्या विकास हुआ है तथा आने वाले समय में इन गीतो की क्या महत्ता होगी। इस विषय को आधार बनाकर शोध विषय का चयन किया गया है।

इन गीतो में पर्यावरण से संबधित जितने भी पक्ष है उन्हें उजागर करने का प्रयत्न किया गया जो आने वाले समय व नई पीढी के लिए नितान्त उपयोगी सिद्ध होगे। इसके साथ ही यह अन्य शोध छात्र-छात्राओं के लिए अनुसंधान का भी विषय बनेगा। लोक साहित्य का भी विषय बनेगा।

लोक साहित्य को बचाने के प्रयास से पर्यावरणीय जागरूकता एंव पर्यावरण चेतना का विकास इस शोध अध्ययन का मुख्य विषय है। लोक साहित्य के आधार पर हमरि माटी हमरौ पाणी पर्यावरण के आधार पर इस शोध कार्य हेतु उत्तराखण्ड के लोकगीतों के माध्यम से प्यावरण अपनी संस्कृति को बचाने में प्रयासरत्न सिद्ध होगा।

प्रस्तावित शोध कार्य में सर्वेक्षणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा और शोध कार्य को विभिन्न तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत किया जाएगा। प्रस्तावित शोध अध्ययन के प्रमाणित संस्करणों का तथा तत् संबंधित अन्य प्रतिष्ठित समालोचनात्मक ग्रंथों का अध्ययन करते हुए अपने शोध अध्ययन को पूर्ण करूँगा।

द्वितीयक डेटा का वर्गीकरण सारणीकरण और विश्लेषण इस शोध कार्य दंतु मूलग्रंथा, सहायक ग्रंथो पत्र पत्रिकाओ एवं लोक पांरम्परिक पुस्तकों की सहायता ली जाएगी।

इस शोध पद्धति के आधार पर विभिन्न पुस्तकालयों संशोधन पद्धति के आधार को लोकगीतां एंव पर्यावरणीय पुस्तको का अध्ययन चिंतन एव मंथन किया जाना सिद्ध माना जायेगा। मेरा अथक प्रयास प्रस्तावित शोध कार्य को उत्तराखण्ड के लोकगीतों के द्वारा पर्यावरणीय चेतना प्रकृति एव सांस्कृतिक सभ्यता को इस शोध मंथन में सम्मिलित किया जाएगा।

शोध साहित्य का सर्वेक्षण शोध का उददेश्य समाज के लिए कुछ नया और उपयोगी बनाना है। किसी भी कार्य की उपयोगिता उस क्षेत्र में पहले हुए शोध की तुलना में मापी जाती है। अनुसंधान का यह चरण अनुसंधान विद्वान को अनुसंधान का क्षेत्र के सभी विवरणो से अवगत कराता है।

1. आधार पेपर से यात्रा
2. साहित्य सर्वेक्षण का उद्देश्य
3. पृष्ठभूमि
4. शोध पद्धति
5. लक्ष्य को परिभाषित करना
6. मुख्य शिक्षण चरण

7 अनुसंधान साहित्य सर्वेक्षण किया विधि।

निष्कर्ष:-

लोक साहित्य लिखने पढने में एक शब्द है पर वस्तुतः यह दो गहरे भावों का गठबंधन है, लोक और साहित्य एक दूसरे के सम्पूरक एक दूसरे में सम्मिलित जहाँ लोक होगा वहाँ उसकी संस्कृति और साहित्य होगा।

विश्व में कोई भी ऐसा स्थान नही है जहाँ लोक हो और उसकी संस्कृति न हो। मानव मन के उदगारों और उनकी सूक्ष्मतम अनुभूतियों का सजीव चित्रण यदि कड़ी मिलता है तो वह लोक साहित्य में ही मिलता है।

यदि हम लोग साहित्य को जीवन का दर्पण करें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। लोक साहित्य के इस महत्व को समझा जा सकता है। लोक साहित्य में कल्पना प्रधान साहित्य की अपेक्षा लोक जीवन का यर्थाथ सहज ही देखने को मिलता है। लोक साहित्य हम

धरतीवासियों का साहित्य है क्योकि हम सदैव कही अपनी मिट्टी बाली भाषा जलवायु तथा सांस्कृतिक संवेदना से जुड़े रहते है। अतः हमे जो भी उपलब्ध होता है वह गहन अनुभूतियो तथा अभावों के कटुसत्यां पर आधारित होता है। जिसकी छाया में वह पलता और विकसित होता है लोक साहित्य हमारी सभ्यता का संरक्षक भी है। साहित्य का केन्द्र लोकमंगल है इसका पूरा ताना-बाना लोक हित के आधार खड़ा मनुष्य पशु-पक्षी पर्यावरण का अहित भी नही सोच सकता उसे वनस्पति की पीड़ा का भी भान होता है। चराचर जगत के प्रति मैत्रिक का यह विस्तार साहित्य ही तो है। जो प्रकृति की गोद में प्रकृति के संरक्षण में मनाये जाते है। संवेदनशीलता का नया वातावरण हमें प्रदान कर पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए उत्प्रेरित करते है। भारतीय जन जीवन में वृक्षो को देवता की अवधारणा की परम्परा के फलस्वरूप इनकी पूजा अर्चना की जाती है। पीपल के वृक्ष में श्रीकृष्ण ने अपनी विभूति बनायी है वृक्ष में विष्णु को, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्ते में श्री हरि, और फलो में सभी देवी- देवताओ को विधमान माना जाता है। विभिन्न तथ्यो एंव लोक जीवन की शैली के आधार पर निष्कर्ष रूप सें कहा जा सकता है कि वृक्ष हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1-12 खण्डो में उत्तराखण्ड का इतिहास (शिव प्रसाद डबराल चारण)

2-माधुरी बडथ्वाल गढवाली लोकगीतो में 2013 (रागदृरागनियों देहरादून धात प्रकाशन)

3-शिवानन्द नौटियाल सम्मेलन 1981 गढवाल के लोक नृत्य गीत प्रयाग, शास्त्री

(हिन्दी साहित्य)

4-रेखा धस्माना उनियाल प्रसिद्ध उत्तराखण्ड लोकगायिका।

5-डा० नन्दकिशोर ढौंडियाल (गढवाल भाषा है बोली नही)

6-जुगल किशोर पेटशाली (कुमाउनी लोकगीत)

7-सुन्दरलाल बहुगुणा (धरती की पुकार)

8-प्रो0 डी0डी0 शर्मा (उत्तराखण्ड़ की लोकोपचार परम्पराऐं)

9-डा0 शिव प्रसाद नैथानी (उत्तराखण्ड) गढ़वाल की संस्कृति इतिहास औश्र लोक साहित्य।

10-डा0 हरिदत्त भट्ट शैलेश (गढ़वाली भाषा और उनका साहित्य)

*Corresponding Author: Awadhesh Bisht
E-mail: awdheshbisht123@gmail.com
Received: 03 July,2025; Accepted: 22 August,2025. Available online: 28 August, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License